आशिक ए रसूलﷺ की पहचान

मौलाना जुल्फिकार अहमद नक्शबंदी (दब)

खुतबात जुल्फकार फकीर हिन्दी/2 [१५८-१६०]

मजमून का खुलासा हे

ये PDF ग्रामर या कोई भाषा का अदब नहीं है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

| आशिक ए रसूल ﷺ की पहचान

आशिक की पहचान क्या हैं? आशिक वह होता है जो मुहब्बत का दावा करे और एक-एक अमल रसूलुल्लाहﷺ के हुक्म के मुताबिक करे. अगर रसूलुल्लाहﷺ की अदाएं पसंद नहीं है तो मालूम हुआ की ज़बानी मुहब्बत है, हकीकी मुहब्बत नहीं. किसी आरिफ ने कहा है

"वही समझा जाएगा शैदाए जमाले मुस्तुफा जिस्का हाल हाले मुस्तुफा हो जिस्का काल काले मुस्तुफा"

रसूलुल्लाहﷺ का आशिक कौन समझा जाएगा? जिसकी बाते रसूलुल्लाहﷺ के हुक्म के मुताबिक हो और जिस्का अमल रसूलुल्लाहﷺ के अमल के मुताबिक हो, सुन्नत के मुताबिक हो, अल्लाह तआला करोडो रहमतें नाज़िल फरमाए उलमाए देवबंद की कब्रो पर की जिन्होंने रसूलुल्लाहﷺ की एक-एक सुन्नत पर डेरे डाले और हिफाज़त फरमाई.

| इश्के रसूल ﷺ का एक अजीब वाकिआ

रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत का वाकिआ मेरे आका के एक इर्शाद का मफहूम है की में उस वक्त तक जन्नत में नहीं जाऊंगा जब तक की मेरी पूरी उम्मत का हिसाब-किताब नहीं हो जाएगा.

एक साहब अपने हाथ में पैसों की थैली लिए हुए जा रहे है. उस्मे कुछ पैसे थे. एक चोर करीब से भागता हुआ उन्के हाथ से थैली छीनकर भाग गया. थोडी दूर आगे गया तो उस्की आंखों की रोशनी खत्म हो गई. उसने वहीं रोना चिल्लाना शुरू कर दिया. कहने लगा ऐ लोगों मैंने फलां जगह पर एक आदमी की थेली छीनी है. मुझे उस जगह पर ले जाओ ताकि में उस्से माफी मांग लूं और मेरी आंखों की रोशनी लौट आए. जब लोग उसे वहां लाए तो थैली का मालिक वहां से जा चुका थे. करीब ही एक नाई था. उस्से पूछा की फलां आदमी से मैंने थैली छीनी थी, तुम उसे जानते हो? उसने कहा पहचानता तो हूं. नमाज़ों के लिए वह आते-जाते है, हो सकता है की अगली नमाज़ के लिए यहां से गुज़रें, अगर आए तो में तुम्हें बता दूंगा. लिहाज़ा उसे बैठा लिया गया. थोडी देर बाद वही आदमी गुज़रने लगा. नाई ने कहा यह वही साहब गुज़र रहे है. चोर उस्के कदमों में गिरकर माफी

मांगने लगा. उसने कहा की भाई मैंने तो उसी वक्त तुझे माफ कर दिया था. वह बडा हैरान हुआ. फिर पूछने लगा, उसी वक्त मुझे माफ कर दिया था? उन्होंने कहा हां, इसलिए की मेरे दिल में ख्याल आया की तुम मेरी थैली ले गए हो और तुमने यह जुल्म किया है. आखिर कयामत के दिन मुकद्दमा पेश होगा. अगर पेश होगा तो फिर हिसाब-किताब होगा. इस तरह मेरे महबूब को जन्नत में जाने में इतनी देर हो जाएगी. इसलिए उसी वक्त मैंने तुझे माफ कर दिया था ताकि न मुकद्दमा पेश हो और न रसूलुल्लाहﷺ को जन्नत में जाने में देर लगे.

| एक आशिक फकीर का वाकिआ

जामा मस्ज़िद दिल्ली के दरवाजे पर एक माज़ूर आदमी बैठा भीख मांग रहा था, एक अंग्रेज़ यहां मस्ज़िद को देखने के लिए आया, हमने भी देखा की जामा मस्ज़िद को अंग्रेज़ देखने के लिए आते जाते है, वह अंग्रेज़ बडा ओहदा रखता था, जब वह इस फकीर के पास से गुजरा तो उसने सैल्यूट मारा ताकि कुछ दे जाए, उस अंग्रेज़ ने उसे कुछ पैसे दे दिए, अंग्रेज़ बाहर खडे हो जाते है जूतो की जगह पर, अन्दर दाखिल नहीं होते, मस्ज़िद के नक्श व निगार और अज़मत ऐसी होती है की अल्लाह के घर के

सामने ही उन्हें सुकून मिल जाता है, वह अंग्रेज़ मस्जिद को देखकर चला गया, घर जाकर मालूम हुआ की जिस बटवे से पैसे निकाल कर दिए थे वह बटवा जेब में नहीं है, पैसे भी काफी थे और पता भी नहीं की कहां गिरे होगे, खैर बात आयी गई हो गई.

एक हफ्ता बाद फिर उसे छुट्टी हुई, उस्की बीवी ने कहा तुम मस्ज़िद देख आए थे, मुझे भी दिखाओ, लिहाज़ा छुट्टी वाले दिन वह अपनी बीवी को लेकर फिर मस्ज़िद देखने के लिए आया, जब वह अंग्रेज़ इस माज़ूर फकीर के पास से गुज़रने लगा तो वह फकीर फौरन खडा हो गया और उस्से कहा की आप पिछली दफा आए थे, मुझे पैसे दिए थे, उस्के बाद आप बटवा जेब में डालने लगे, थोडी दूर आगे जाकर बटवा गिर गया और मैंने उठया, यह बटवा मेरे पास आपकी अमानत है, यह में आपके हवाले करता है.

अंग्रेज ने बटवे को खोलकर देखा तो पैसे बिल्कल पूरे थे, हैरान होकर वह सोचने लगा की बटवा तो दे देता मगर इस्के अन्दर की कुछ रकम निकाल सकता था, मुझे उम्मीद तो यही थी, यह क्या हुआ की सारे के सारे पैसे ज्यो के त्यो वापस कर दिए, उसने उस फकीर से पूछा की आखिर क्या बात है की तुमने कुछ अपने पास नहीं रखे?

वह माज़ूर फकीर कहने लगा की बात यह है की कयामत के दिन हर आदमी अपने नबी के पीछे होगा, जमआतो की सूरत में अंबिया (अलै) के पीछे चल रहे होगे, जब मैंने बटवा उठया तो मेरा जी चाहता था की में इस्मे से कछ ले मगर फिर मुझे ख्याल आया की हर काम अल्लाह के सामने पेश होना है, अगर में यह पैसे रख लूंगा तो कयामत के दिन में रसूलुल्लाहﷺ के पीछे खडा हूंगा और आप हज़रत इसा (अलै) के पीछे खडे होगे, उस वक्त ऐसा न हो की आपके नबी मेरे नबी को गिला दें की आपके उम्मती ने मेरे उम्मती के पैसे ले लिए थे यह सोचकर मैंने इस्मे से कोई ख्यानत नहीं की और आपके पैसे मैंने आपको लौटा दिए, काश हमे दिल्ली के इस माज़ूर फकीर जैसी मुहब्बत भी रसूलुल्लाहﷺ से होती.